अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जून-2024

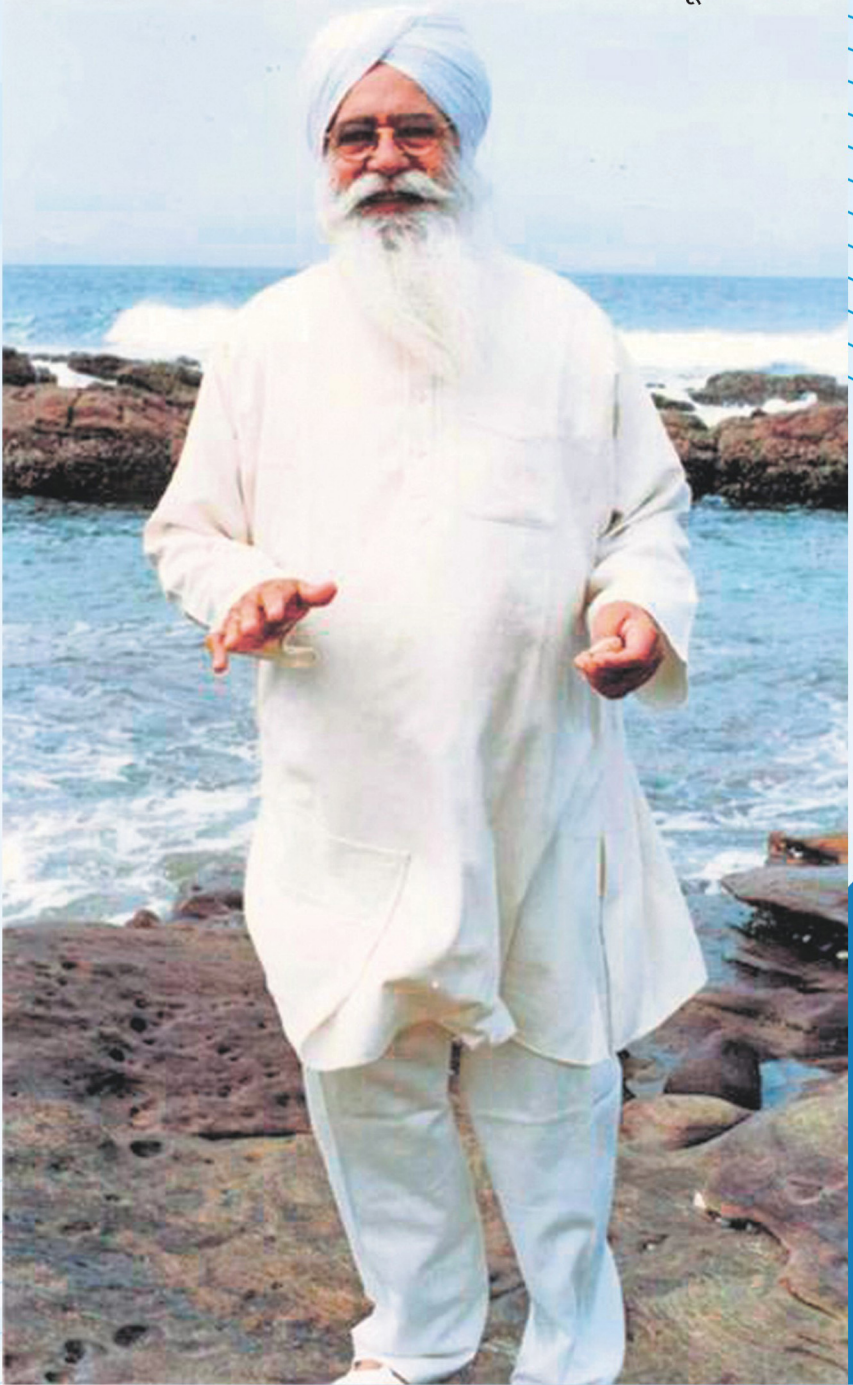

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–बाइसवां	अंक–दूसरा	जून–2024

3

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

तपदे हिरदे ठारे आके

17

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु के दर्शन

29

महाराज कृपाल सिंह जी के मुखारविंद से अनमोल वचन

आप अकेले नहीं हैं

32

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन–अभ्यास

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम**
16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा**
99 50 55 66 71
उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 267 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

तपदे हिरदे ठारे आके

02 मार्च 1982 | 16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

तपदे हिरदे ठारे आ के, नाम दा मींह वरसा गया।
दर्द निवारण दुखियां वाले, सच्चा सतगुरु आ गया।।

मैं हमेशा ही बताया करता हूं कि किसी पेड़ का फल खाने से ही उस पेड़ के गुणों का पता चलता है। इसी तरह किसी सन्त की शरण में जाने से पहले उसकी हिस्ट्री पढ़ लेनी बहुत जरूरी होती है कि इसके अंदर परमात्मा से मिलने की कितनी लगन और तड़प है। इसने कितनी मेहनत की और इसे उस मेहनत का क्या फल प्राप्त हुआ। डॉक्टर की उतनी कद्र तंदुरुस्त को नहीं होती जितनी रोगी को होती है। इसी तरह जिसका दिल मालिक की खातिर तड़पता है, उसे ही मालिक की कद्र होती है।

मुझे बचपन से ही कविता लिखने और बोलने का काफी शौक था। मुझे हुजूर के आगे भजन बोलने का भी काफी मौका मिला है बेशक उन्होंने मुझे सामने नहीं बैठने दिया लेकिन मैं स्टेज पर ही उनके साथ बैठकर बोलता रहा हूं। मेरी अभ्यासी जिंदगी थी इसलिए मैं कविता का वह ज़खीरा संभाल नहीं सका। कई बार कविता बोल देता पर लिखता नहीं था अगर लिख लिया तो कागज नहीं संभाल सका। जब हुजूर मेरे घर आए तो मेरे दिल में इतनी तड़प थी कि मैंने उस वक्त यह भजन बोला:

अज शुभ दिहाड़ा ऐ, भागां नाल आया ऐ।
सतगुरु जी प्यारे दा, अज दर्शन पाया ऐ।।

मैं अपनी जिंदगी का वह दिहाड़ा, वह घड़ी, वह मिनट-सेकंड पवित्र समझता हूं जब मेरा मिलाप करन-कारण, अनामी सतपुरुष कृपाल के साथ हुआ। जब कोई भी यह भजन बोलता है तो मेरी आंखों के आगे वह

वक्त आ जाता है कि मैंने अपने गुरुदेव के आगे यह भजन बोला था कि जिसने गुरु को भुला दिया, उसने संसार में कभी सुख नहीं पाया।

मेरे दिल में बचपन से ही अनामी कृपाल से मिलने की तड़प और बिरह थी। मैं हिन्दुस्तान में उन्हें ढूंढ़ने के लिए जंगलों–पहाड़ों और मूर्ति–मंदिरों में काफी जगह घूमा, कोई जगह नहीं छोड़ी। यह एक सच्चाई है कि सबसे पहले महाराज सावन सिंह जी ने मेरा ढाढ़स बँधाया कि तुमसे सेवा लेनी है, तुम्हें वस्तु देने वाला तेरे घर पर ही आएगा। बाबा बिशनदास जी ने भी दिल को धीरज दिया और टूटे दिल को खड़ा किया कि तुझे वस्तु जरूर मिलेगी और वह तेरे घर आकर ही देगा। यह उन्हीं महापुरुषों का वरदान था जो कृपाल के रूप में शब्द देह धारण कर मुझे मिले।

मैं प्रभु कृपाल का धन्यवादी हूं जो मुझे इंसानी जामे में मिले। मैंने यह शब्द उस वक्त बोला था, जब हजूर ने इस गरीब अजायब पर अपनी अंदरुनी दया की और संसार की तरफ से आंखें बंद करके अपनी तरफ खोली। मैंने इस शब्द में अपनी तड़प ब्यान की है।

गंगानगर रेगिस्तानी इलाका था, यहां पानी की बहुत कमी थी, बीस–बीस मील तक पानी नहीं मिलता था। यहां कोई पेड़, बाग–बगीचे और नहर नहीं थी। लोग पानी की इतनी कद्र करते थे कि जब बारिश हो जाती तो उस पानी को स्टॉक करके रखते थे। भक्त नामदेव जी ने इस इलाके की तस्वीर अपनी बानी के अंदर खिंची है:

मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला
सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला

जिस तरह राजस्थान के मारवाड़ इलाके में लोगों को पानी प्यारा है, मुझे भी परमात्मा उतने ही प्यारे हैं। राजस्थान की कहावत है अगर कोई किसी को राम–राम बोलता है तो वह आगे से उसे जवाब देता है कि तू प्यासा होगा, पानी की खातिर ही राम–राम बोल रहा है अगर हम आज

पंजाब या किसी और इलाके में जाते हैं तो लोग हमें यह ताना देते हैं कि ये उस इलाके के हैं, जहां लोग पानी भी नहीं पिलाते थे। जब किसी के पास पानी होता ही नहीं था तो वह पानी कहां से पिलाएं?

आज कल तो यहाँ आमतौर पर बादल होते हैं क्योंकि हरियाली पर बारिश ज्यादा होती है लेकिन उस वक्त बादल कम ही नजर आते थे अगर कहीं बादल नजर आता तो सारे लोग बाहर निकलकर बादल को ही देखते थे। अगर बारिश हो जाती तो लोग बहुत पुण्य–दान करते और खुशियां मनाते थे कि परमात्मा ने हमारे ऊपर बहुत दया–मेहर की है। उस वक्त लोगों की खुशी बयान से बाहर हो जाती थी। मेरा यह सब कुछ समझाने का मतलब यही है कि यहाँ पानी की कमी थी अगर परमात्मा पानी बरसा देते थे तो धरती हरी–भरी हो जाती थी और लोगों के दिल खिल जाते थे। इसी तरह मेरे दिल में भी परमात्मा कृपाल से मिलने की बहुत तपिश थी। महाराज कृपाल ने अपने नाम की बारिश करके मेरे तपते हुए दिल को ठंडा कर दिया। उस वक्त काफी प्रेमी पास में ही बैठे थे। मैंने अपने गुरुदेव के आगे खड़े होकर प्यार से यही कहा:

दुखियां दे दुख दूर करने नू, सतगुरु सच्चा आ गया।

परमात्मा प्योर और पवित्र हैं, जो उतना ही प्योर और पवित्र होकर शब्द को अपने अंदर प्रकट कर लेता है और हमारे अंदर उस शब्द को प्रकट करने की समर्थता रखता है, वही सच्चा सतगुरु है क्योंकि दुनिया में झूठे गुरु भी हैं।

सन्त–महात्माओं की लेखनी में हमें दो चीज़ें मिलती हैं–सच्चा सतगुरु और झूठा सतगुरु। सच्चे और झूठे सतगुरु की पहचान बताई गई है अगर हम न परखें तो यह हमारी गलती है, नहीं तो इशारों के मुताबिक दोनों ही बता देते हैं कि मेरे अंदर क्या है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''कई बार झूठा आदमी खुद ही अपना झूठ बता देता है।'' सन्तमत

मेहनत और पवित्रता मांगता है अगर हम मेहनत नहीं करते अपने ख्याल, मन और आत्मा को पवित्र नहीं करते तो जो परमात्मा प्योर और पवित्र है वह हमें अपने में नहीं मिलाता। गंदे कपड़े को कोई ट्रंक में नहीं रखता।

सन्तमत एक फिसलन भरी पटरी के समान है, एक गलत कदम उठाया तो हम सैकड़ो मील पीछे चले जाते हैं । एक बुरा ख्याल अंदर आ जाए तो हमारी आत्मा फौरन बाहर आ जाती है और मन बाहर दुनिया में फैल जाता है।

स्वामी जी महाराज हमें बताते हैं कि जब सच्चा गुरु मिल जाता है तो हमें खोज नहीं करनी चाहिए। प्रेम प्यार से उनके बताए हुए रास्ते पर चलना चाहिए और अपने जीवन को उनके कहे मुताबिक ढालना चाहिए। गुरु के वचन उनकी देह से भी प्यारे समझने चाहिए। अगर हमें झूठा या कच्चा गुरु मिल जाता है, वह हमारी आत्मा का घात करने और अपने मतलब के लिए ही गुरु बना होता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं :

काचे गुरु को छोड़ो यह भी पाप कटा।

मेरा इतनी बातें कहने का यही भाव है कि हमें 'शब्द–नाम' मिल चुका है, अब हमारा काम है कि हम मेहनत करें और अंदर जाएं। मेहनत से अंदर का मार्ग किताब की तरह खुल जाता है और अंदर जाकर कोई वहम–भ्रम नहीं रहता। सन्त–सतगुरु नाम देते वक्त सेवक के अंदर शब्द रूप होकर बैठ जाते हैं। वे हमेशा ही हमारी इंतजार में होते हैं, हमारा भी फर्ज बनता है कि उनकी दया प्राप्त करें।

याद रखें, मेहनत के बगैर हम दुनिया में भी कामयाब नहीं हो सकते, सन्तमत में तो सवाल ही पैदा नहीं होता। परमात्मा और गुरु हमारे अंदर बैठे हैं, वे धोखा नहीं खाते। कहीं दिल में यह ख्याल हो कि सोते हुए का पर्दा खुल जाएगा, पर्दा हमेशा मेहनती ही खोलता है। सतगुरु बहुत समझदार होते हैं, वे संगत को कभी भी अंधे के सहारे लगाकर नहीं जाते।

इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ।।

मैंने मेहनत की और मेरे गुरुदेव ने मुझे उस मेहनत का फल दिया है। मैं आप लोगों को पवित्र रहने की हिदायत करता हूं और मेहनत करने की सलाह देता हूं। आप मेहनत करके देखें अगर आप मेहनत करेंगे तो आपकी मेहनत व्यर्थ नहीं जाएगी, आपको उसका फल जरूर मिलेगा। कबीर साहब का वाक है:

कबीर कमाई आपनी, कदी न निष्फल जाय।
सात समुद्र आड़ा पड़े, मिले अगाऊ धाय।।

जिस थां ते कृपाल प्यारा, ओत्थे बाग बहारां।
समय–समय सिर लाऐ बूटे,अज खिड़ियां गुलजारां।।

मन काल का एजेंट है और इंद्रियां इसके हथियार हैं, ये हमारी आत्मा के पौधे को खुश्क करके रखती हैं अगर खुश्क खेती को पानी मिल जाए तो वह हरी–भरी हो जाती है। इसी तरह जिस हृदय में कृपाल सतगुरु प्रकट हो जाते हैं, वह हृदय सूखी खेती की तरह खिल जाता है। गुरु मरते नहीं, चोला छोड़ते हैं।

मैं कहा करता हूं कि जो लोग यह कहते हैं कि गुरु मर गया है, ऐसे लोगों को कोर्ट में खड़ा कर लें कि आपने मरने वाला गुरु क्यों किया? जो गुरु जन्म–मरण में लगा हुआ है, वह हमारा क्या उद्धार कर सकता है? एक माली पौधे लगाता है और दूसरा आकर उन्हें पानी देकर हरे–भरे कर लेता है। इसी तरह महात्मा एक चोले में आकर नाम का बीज बोते हैं और दूसरे महात्मा आकर उन आत्माओं को सतसंग सुनाकर और भजन–अभ्यास करवा कर हरा–भरा करके मंजिल पर पहुंचा देते हैं।

हुजूर महाराज कहा करते थे कि एक को खारिश पड़ जाए तो वह कईयों को डाल जाता है। इसी तरह सन्त–महात्मा भी हमारे अंदर नाम की लगन पैदा कर जाते हैं क्योंकि उनके अंदर भी नाम की लगन होती

है। महात्मा सतसंग का पानी देकर नाम की खेती को हरी–भरी रखते हैं। सतसंग भजन की बाड़ होती है। हुजूर का वाक है, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हजार काम छोड़कर अभ्यास में बैठ जाएं।'' जो महात्मा मालिक के प्रेम में जाग चुके हैं, उनका सतसंग ही फायदेमंद है। उन जागते महात्माओं की संगत–सोहबत करनी चाहिए, जिन्होंने अपने अंदर सत्य को प्रकट कर लिया है। महात्मा ब्रह्मानंद जी कहते हैं:

सत संगत जग सार साधो, सत संगत जग सार रे।
काशी नहाऐ, मथुरा नहाऐ, नहाऐ हरिद्वार रे।।
चार धाम तीर्थ फिर आऐ, मन का नहीं सुधार रे।
वन में जाऐ कियो तप भारी, काया कष्ट अपार रे।।
इन्द्री जीत करे वस अपने, हृदय नहीं विचार रे।
मंदिर जाऐ करे नित पूजा, राखे बड़ो अचार रे।
साधु जन की कदर ना जाने, मिले ना सिरजनहार रे।
सत संगत जग सार साधो, सत संगत जग सार रे।।

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं:

बिनु संगति करम करै अभिमानी कढि पाणी चीकड़ु पावै गो।

गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं:

महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता।
मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता।।

कबीर साहब कहते हैं :

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी हूं से आध।
कबीर संगति साध की, कटै कोटि अपराध।
कबीर जम का ठेंगा बुरा है ओहु नही सहिआ जाइ।
एकु जु साधू मुोहि मिलिओ तिनिब लीआ अंचलि लाइ।।

महात्मा हमारे फायदे के लिए दिन–रात हमें सतसंग सुनाते हैं, बहुत मेहनत करते हैं। हमारा मन बहुत मक्कार, चंचल और हटीला दुश्मन है। इसे जब तक इसके ऐब बताते रहेंगे तो यह मालिक की तरफ चल सकेगा।

नाम दे बूटे लाऐ उसने, सतसंग पानी पा गया।
दर्द निवारण दुखियां वाले, सच्चा सतगुरु आ गया।।
धन–धन कृपाल प्यारा, अपनी चरनी ला लया।
पंच शब्द दा रस्ता दस्स के,अपने विच मिला लया।।

शब्द रूप सतगुरु देह धारण करके आते हैं और हमारे बीच रहते हैं। उन्हें यह अधिकार होता है जिसे चाहें ले जाएँ। हम अपनी आत्मा को मन इंद्रियों के घाट से ऊपर ले जाकर ही उनका धन्यवाद कर सकते हैं फिर पता चलता है कि किस तरह भगवान इंसानी जामे में छिपे हुए हैं। परमात्मा धन्य हैं जो कृपाल के रूप में आए, उन्होंने अपनी पहचान दी और पांच शब्द का रास्ता बताकर अपने अंदर मिला लिया।

'शब्द' तो एक ही है जो सच्चखंड से उठता है लेकिन उसे पांच शब्द इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह पांच मंजिलों में से गुजरता है। जिस तरह समुन्द्र का पानी जिस जगह से निकलता है उसकी और आवाज है, जब वह पानी पत्थरों से आकर टकराता है तो उसकी और आवाज हो जाती है। जब वही पानी साफ जमीन पर आ जाता है तो उसकी कोई और आवाज होती है। जब वही पानी समुन्द्र में जाकर मिलता है तो उसकी कोई और आवाज हो जाती है। पानी एक ही है लेकिन जैसी जगह आती है, वह वैसी आवाज बदल लेता है। इसी तरह 'शब्द' तो एक ही है जो सच्चखंड से उठता है और हमारे माथे के पीछे धुनकारा दे रहा है लेकिन पांच मंजिलो में से गुजरने के कारण महात्मा ने पांच शब्द कहकर बयान किया है। मुसलमान महात्माओं ने पांच कलमें कहकर बयान किया है।

महाराज सावन कहते हैं जब तक हमारी आंखें बंद हैं, हम तब तक ही कहते हैं कि हम सतगुरु के पास जाते हैं या हमने नाम लिया है। जब आंखें खुल जाती हैं तो पता चलता है कि किसी ने हमारे ऊपर दया करके हमें नाम दिया है और वही हमें अपने पास बुला रहे हैं। गुरु साहब कहते है:

जीअ जंत सभि तुधु उपाए, जितु जितु भाणा तितु तितु लाए।

परमात्मा खुद ही इन जीवों को पैदा करते हैं, वे जहां मुनासिब समझते हैं और जैसी किसी की तड़प और लगन होती है, उसे वहीं लगा देते हैं। जिन्हें दुनिया प्यारी है और जिनका दीन–ईमान ही दुनिया है, उन्हें दुनिया में लगा देते हैं और जिनके दिल में परमात्मा की तड़प है, उन्हें सतगुरु से मिला देते हैं और अपनी साध–संगत में ले आते हैं ।

दुई–दवैत का भेद मिटा के, इक्को शब्द सिखा गया।
दर्द निवारण दुखियां वाले, सच्चा सतगुरु आ गया।।

हम ईर्ष्या में सड़ते हैं, कौम और मजहबों की आपस में ईर्ष्या और लड़ाई–झगड़ा है। एक कौम दूसरी कौम को बुरा–भला कह रही है, एक समाज दूसरे को बुरा कह रहा है लेकिन जब हम सतगुरु को अंदर प्रकट कर लेते हैं सतगुरु की शिक्षा पर अमल कर लेते हैं तब हमें पता चलता है कि दोस्त और दुश्मन के अंदर गुरु और परमात्मा ही हैं। इसलिए हम अपने गुरुदेव का धन्यवाद करते हैं । गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं :

बिसरि गई सभ ताति पराई,जब ते साधसंगति मोहि पाई।
ना को बैरी नही बिगाना, सगल संगि हम कउ बनि आई।।

हर थां ते कृपाल प्यारा, अक्खियां विच समाया है।
घट–घट दे विच वसदा सोहणा,विरले ने ही पाया है।।

मैं इस शब्द में सुनी सुनाई बात नहीं कर रहा हूँ, मुझे जो कुछ अपने गुरुदेव की दया से अभ्यास में से प्राप्त हुआ है, मैं अपना तजुर्बा ही बयान कर रहा हूं। मैं अपने गुरुदेव को हमेशा सुंदर कहा करता हूं। आम लोग साधु–सन्त को बाबा कहते हैं। हिन्दुस्तान में यह रिवाज है अगर कोई किसी के यहां मांगने चला जाए तो उसे भी बाबा कह देते हैं। बाबा तो मांगने वाला भी कहलवा लेता है, गुरु तो सुंदर होते हैं ।

सोहणे दे दर्शन दी खातिर लक्खां लोक फकीर भए।
डेरे विच जंगलां लाए सुक के मिस्द हरीड़ पए।
सोहणे ने दर्शन नहीं दित्ता ते लक्खां दिल दलगीर भए।

गुरु अर्जुन देव जी ने भी कहा है:

सजण मुखु अनूपु अठे पहर निहालसा।
फिरदा कितै हालि जा डिठमु ता मनु ध्रापिआ।।

स्वामी जी महाराज ने भी कहा है कि मानते हैं दुनिया में लोगों ने हूर–परियों को बहुत सुंदर बयान किया हैं लेकिन गुरु की खूबसूरती बयान करना बहुत मुश्किल है।

मेरे गुरु का दरस कोई देखे, हो जावे हूर परंदरी।

ऐसे सुंदर सतगुरु को जब हम एक बार अपने घट में प्रकट कर लेते हैं फिर दुनिया की किसी भी चीज़ पर दिल नहीं जाता। दुनिया की कोई भी चीज़ हमें मोह नहीं सकती क्योंकि किसी के अंदर सतगुरु जैसी कशिश और प्यार नहीं होता। उस गुरु जैसा कोई सुंदर नहीं होता। बुल्लेशाह को उनके भाई–बहनों ने पूछा कि आपके गुरु कैसे हैं? बुल्लेशाह ने कहा:

जे कोई देखे बाहरों इनायत नू ते गल विच लीरां पाइयां।
जे कोई देखे अंदरों इनायत नू ते बहिश्त थूकां पाइयां।।

अगर कोई बाहर से देखेगा तो वे इंसान ही हैं, कपड़े ही पहनने हुए हैं अगर कोई अंदर जाकर देखेगा तो वह स्वर्ग में भी नहीं थूकेगा कि स्वर्ग में क्या है, गुरु तो इससे भी सुंदर और अच्छे हैं।

मुसलमानों में सैय्यदों की बहुत इज्जत होती है, उन्हें ऊंची जाति वाला मानते हैं। बुल्लेशाह तो सैय्यद थे लेकिन उनके गुरुदेव इनायत शाह अराईं थे। मुसलमानों में अराईं नीची जाति वाले माने जाते हैं लेकिन बुल्लेशाह कहते थे, ''जो मुझे सैय्यद कहेगा उसे दरगाह में सजा मिलेगी और जो मुझे अराईं कहेगा उसे स्वर्गों में जगह मिलेगी।'' प्रेमी प्रेम में इतना

मस्त हो जाता है कि वह अपने आपको भूल जाता है और उसे हर जगह गुरु ही दिखते हैं। गुरु उसकी आंखों में इस तरह समा जाते हैं कि उसे पशु–पक्षी, दोस्त–दुश्मन के अंदर अपने गुरुदेव ही दिखाई देते हैं। बेशक वे हर जगह, हर घट में व्यापक हैं लेकिन मेहनती उन्हें प्रकट कर लेते हैं, गुरुदेव उनकी आंखों में समा जाते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ।

कोई–कोई उसे अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं। आप कहते हैंः

जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै।

करोड़ों में कोई एक आधा ही होता है जो गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लेता है और अपने ऊपर दयालु बना लेता है।

दुनियां दे सब इल्म छुड़ा के, इक्को शब्द सिखा गया।
दर्द निवारण दुखियां वाले, सच्चा सतगुरु आ गया।।

हुजूर के जाने के बाद मेरे पास बहुत से सतसंगी आए, जिन्होंने बहुत किताबें पढ़ी हुई थी, उन्होंने किताबो के बहुत हवाले दिए। पप्पू को पता ही है लेकिन मैं यही कहता रहा कि देखो भई, कृपाल ने मुझे कोई इल्म पढ़ने में नहीं लगाया, अभ्यास करने में लगाया। मैं अंदर जाता हूं, मुझे शांति है अगर आपकी समझ में आता है तो आप भी अंदर जाएं और शांति प्राप्त करें। अंदर जाकर आपको पता चलेगा कि कृपाल क्या ताकत थे।

महाराज सावन सिंह जी कहते थे कि आप अंदर जाकर देखें, दुनिया में जिनकी किताबें मशहूर हैं, वे अंदर अटके खड़े हैं और काल को हिसाब–किताब दे रहे हैं। महाराज कृपाल कहा करते थे कि किताब लिखना मन बुद्धि का काम है, यह कोई सबूत नहीं कि इसने बहुत किताबें लिखी हैं तो इसका पर्दा खुला होगा या इसे परमात्मा मिले होंगे। गुरु साहब कहते हैं:

नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ।
मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ।
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ।।

अगर कोई सच्चे से सच्चा ग्रंथ या वेद–शास्त्र है तो वह इंसान का जामा है। सारे ही धर्म अपने आपको पहचानने पर जोर देते हैं। परमात्मा ने इसी वेद को पढ़ने के लिए हमें इस मंडल पर भेजा है। अगर हम इस छह फुट के वेद को नहीं पढ़ते और समझते तो परमात्मा ने हमें जो मौका दिया है, वह मौका हम अपने हाथों से गवां जाते हैं। हुजूर महाराज कहा करते थे कि मैं पढ़ने–पढ़ाने को बुरा नहीं कहता अगर कोई कमाई वाला पढ़ा–लिखा है तो उसके गले में विद्या फूलों का हार है। पढ़ा–लिखा हमें कई तरीकों से अच्छी तरह समझा सकता है।

महात्मा पढ़ने के साथ चढ़ने पर भी जोर देते हैं। वे कहते हैं कि पढ़ने से तुम्हारा मकसद पूरा नहीं होगा सिर्फ तुम्हें जानकारी मिलेगी लेकिन मेहनत भी करनी है। पढ़ना इस तरह है जैसे कोई वस्तु डालने के लिए हम बर्तन को साफ करते हैं अगर हम उसमें कोई वस्तु न डाले तो बर्तन साफ करने का क्या फायदा? इसलिए सारी जिंदगी बर्तन ही साफ नहीं करते रहना चाहिए, उसमें कोई वस्तु भी डालनी है।

सन्त–महात्मा जब भी इस मंडल पर आते हैं, वे 'शब्द–नाम' का दान देते हैं, मेहनत पर जोर देते हैं। वे कहते हैं कि मेहनत करें, अंदर चलें और देखें कि परमात्मा ने आपके अंदर क्या–क्या रचना रची है, आपके लिए क्या–क्या सामान रखा है?

दास अजायब अर्जां करदा, सुण कृपाल प्यारेया।
दर तेरे ते ढठे आके, रखीं लाज दातारेया।
नामदान दी झोली भर के, झोली भरन सिखा गया।
दर्द निवारण दुखियां वाले, सच्चा सतगुरु आ गया।।

जब तक हमारा पर्दा नहीं खुलता तब तक हम अपने पूर्ण गुरुदेव को नहीं पहचान सकते और अहंकार करते हैं कि गुरु क्या जानते हैं, मैं गुरु से ज्यादा समझदार हूं लेकिन जब पर्दा खुल जाता है, तब हमें उनकी ताकत का पता चलता है। जब हम सच्चे अर्थों में उन्हें प्रकट कर लेते हैं फिर हम उनके दर पर ढह जाते हैं कि हमारी लाज आपके हाथ में है, आप ही हमारी लाज रख सकते हैं। शिष्य को सच्चे अर्थों में पता होता है कि मैं किसी बाग की मूली नहीं हूँ। जैसे आसमान गुरु के हाथ में है, गुरु उसे हिला सकते हैं, गुरु जो चाहे सो कर सकते हैं। मेरे नाक में नकेल है और नकेल गुरु के हाथ में है। मैं एक कठपुतली हूं, गुरु मुझसे जो करवाना चाहें करवा सकते हैं।

मैंने जिस समय अपने गुरुदेव के आगे यह शब्द बोला था, उस समय मेरी टांगे कांप रही थी और मेरी आंखों से पानी आ रहा था कि मैं आपके दर पर पड़ा हूं, मेरी लाज आपके हाथ में है। काल बड़ी ताकत है अगर आपने लाज नहीं रखी तो मेरी लाज रखने वाला और कौन है? 'सतनाम' कहने पर कबीर की लाज रखी, 'सत करतार' कहने पर गुरु नानक देव जी की लाज रखी और 'धन कृपाल' कहने पर अजायब की लाज रखी।

कबीर साहब काशी में एक छोटी जाति में पैदा हुए। उस वक्त के पंडित उनका विरोध करते थे। पंडितों ने लोगों को चिट्ठियां लिखकर भेज दी कि कबीर साहब का भंडारा है, देखते हैं ये लोगों को अन्न–पानी कहां से खिलाएंगे? बहुत सारे लोग भंडारा खाने के लिए आ गए। इतने लोगों को देखकर माता लोई घबराई कि इतने लोगों को अन्न–पानी कहां से देंगे?

कबीर साहब ने वहां पड़ी टोकरी पर कपड़ा डालकर लोई से कहा , ''घबराने की जरूरत नहीं, सबको खाना खिलाते जाओ।'' सारी दुनिया खाना खाकर 'धन्य कबीर, धन्य कबीर' कहती हुई चली गई लेकिन

उनका भंडारा खत्म नहीं हुआ हालांकि भंडारे की कोई तैयारी नहीं थी। जब लोग कबीर की बड़ाई करने लगे तो कबीर साहब ने कहा:

कबीर ना हम कीआ न करहिगे ना करि सकै सरीरु।
किआ जानउ किछु हरि कीआ भइओ कबीरु कबीरु।।

इसी तरह गुरु नानक देव जी के पास सिद्ध अपने मुंह से दाँत–जाड़ें निकाल कर आ गए कि देखें ये हमें कैसा खाना देते हैं। गुरु नानक देव जी ने भाई लहणा से कहा (जो बाद में गुरु अंगद देव जी बने) कि भई देख, इन बेचारों ने कितनी तकलीफ की है, अपने दाँत–जाड़ें निकाल दिए हैं, इन्हें ऐसा खाना दें जिससे इन्हें तकलीफ न हो। गुरु नानक देव जी ऊपर पेड़ की तरफ झांके और कहने लगे, ''भई, तू देख तो सही, ये मिठाइयां ही हैं।'' भाई लहणा ने पेड़ पर चढ़कर थोड़ा–सा पेड़ को हिलाया तो नीचे मिठाइयों के थाल लग गए। गुरु नानक देव जी ने कहा, ''हां भई खाओ।'' सिद्धों के लिए गुरु नानक देव जी ने हलवा बनवाया था। आज भी सिखों में हलवे का रिवाज चल रहा है। जब ग्रुप आश्रम आता है तो हम भी एक दिन हलवा बनाते हैं। भाई गुरदास ने उस वक्त का नक्शा खींचकर लिखा है:

कीकरां तो मिठाइयां झड़वाइयां मेरे सतगुरु ने।
खारा जल चरण छूए मिठ्ठा होए जावन्दा।।
बेरी हेठ बैठे गुरु बेरी वी निहाल होई।
रीठे वनी ढिठेयां कौड़ा रीठा मीठा होए जावन्दा।
अक्कां दियां कुकड़ियाँ ताँ देख के निहाल होइयां।
आम्ब ते अनार मरदाना तोड़ खावन्दा।
पशु ते प्रेत दैंत तारे पूरे सतगुरु ने।
बंदा क्यों ना तरे जो शरण चल आवन्दा।।

यह बहुत दिलचस्प कहानी है कि किस तरह अजायब की लाज रखी। मैं दिन–रात कृपाल की याद में लगा हुआ था। यह बात काफी साल पहले की है, प्रेमी कहने लगे कि भंडारा मनाना है। मैंने कहा, ''हां भई, मना लें। लोगों को यह कहें कि आकर खाना खाएं।'' अब हमारे पाठी जी और

सारे लोग परेशान हुए कि यह क्या बोल रहे हैं। मैंने कहा कि यह सब गुरु का काम है, हमारा काम नहीं। मैं अब भी इन्हें कहता हूं कि आप बर्तन धोकर रख दें, सुबह भरे होंगे, यह कृपाल की ताकत है। सब सो गए आधी रात को एक ट्रक आया जिसमें दालें, आटा, सब्जी, घी और हर चीज़ थी जिसकी इन्हें जरूरत थी लेकिन इन्हें अभी तक यह पता नहीं चला कि यहां अन्न–पानी कौन रख गया था? वे मेरे प्यारे गुरु थे जिन्होंने मेरी लाज रखी क्योंकि मैंने उनके भरोसे ही इन लोगों से कहा था, ''अगर तुम बर्तन धोकर रखोगे तो सुबह भरे हुए होंगे।''

हुजूर अपनी जिंदगी में हमेशा यही कहते रहे, ''भई, देने वाले का क्या कसूर है? सवाल तो लेने वाले का है।'' वे देने के लिए आए थे, जिसकी जितनी ग्रहणशक्ति थी, उसने उनसे उतना प्राप्त किया। हुजूर ने झोलियां भरकर लुटाईं और भाग्यशाली लूट कर ले गए। इसी तरह उन्होंने मेरी झोली भरी और मेरी ड्यूटी भी झोली भरने पर लगा गए। यह कृपाल की मौज है जो अजायब के रूप में बंट रही है, यह भी देना ही जानती है।

मुझे कई जगह से कई प्रेमियों ने पत्र भेजे और टेप भी भेजी कि अगर आपको लंगर में जरूरत है तो हम राजस्थान पैसे भेज देंगे। मैं यही कहा करता हूं कि जिस दिन मेरा लंगर हुआ, उस दिन भेज देना। अभी तो यह लंगर मेरे गुरुदेव कृपाल का है, उन्हें इसका फिक्र है। जैसे उनकी मर्जी होगी, वे चलाएंगे। मेरा आपको यह शब्द कहने का भाव इतना ही है कि हमारे ऊंचे भाग्य हों तो हमें ऐसी दात देने वाले गुरु मिलें, उससे भी ऊंचे भाग्य हों तो हम ऐसे गुरु का हुक्म मान कर कमाई करें।

हमें कृपाल के रूप में भगवान मिले हमारा भी फर्ज बनता है कि हम उस भगवान के हुक्म को मानें, कमाई करें, मेहनत करें और अंदर जाकर देखें कि हमारे गुरुदेव हमारी इंतजार में हमारा स्वागत करने के लिए खड़े हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु के दर्शन

29 दिसम्बर 1982 16 पी.एस. राजस्थान

एक प्रेमी: *मेरे कुछ मित्र बहुत शांत और अभ्यासी ज़िंदगी व्यतीत करना चाहते हैं इसलिए वे अपना दुनियादारी का काम छोड़कर अपने घर में रहकर बहुत शांत ज़िंदगी बिता रहे हैं और ज़्यादातर समय अभ्यास में लगाते हुए गुरु के साथ अंतरी रिश्ते में आगे कामयाब होने की कोशिश कर रहे हैं। इसका मतलब यह भी है कि अब उनके पास इतने पैसे नहीं हैं कि वे गुरु के शारीरिक स्वरूप के दर्शन करने के लिए यहाँ आ सके। इस बारे में आपकी क्या राय है, क्या आप कुछ कहना चाहेंगे? क्या कभी ऐसा समय आता है या ज़रूरत होती है, जब यह बेहतर होता है कि दुनिया के सारे कामकाज छोड़ शांत बैठकर अभ्यास किया जाए?*

बाबा जी: हाँ भई, अभ्यास करना बहुत अच्छा है, मैं इसका स्वागत करता हूँ लेकिन दुनिया के कामकाज छोड़कर हम जो प्लानिंग बनाते हैं कभी–कभी मन ऐसे आदमियों को धोखा दे देता है फिर वे अभ्यास में भी नहीं बैठते और दुनियादारों से भी अलग हो जाते हैं। दुनिया को हंसने का मौक़ा दे देते हैं कि देखो जी, इसने चार–पाँच साल अभ्यास किया, दुनिया छोड़ी और आज फिर दुनिया जैसे काम कर रहा है। इससे बेहतर यह है कि अपनी रोज़ी रोटी खुद कमाएं किसी पर बोझ न बनें और साथ–साथ अपना अभ्यास भी करते रहें।

मेरा यह व्यक्तिगत तजुर्बा है, मैंने बहुत सारे आदमियों को देखा है जो कई साल ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं लेकिन जब मन उन्हें धोखा देता है, तब पहाड़ से उठाकर ज़मीन पर गिरा देता है।

आज से तकरीबन पैंतीस साल पहले पंजाब की घटना है, जहां बाबा बिशन दास जी रहा करते थे। वहां एक आदमी था जिसका नाम एकम दास

था। वह तकरीबन बीस–तीस साल पहले घर–बार छोड़कर जंगल में चला गया था। उसने काफ़ी अरसा बाहर बिताया आखिर मन ने उसे धोखा दिया और कहा कि दुनियादारी भी करनी चाहिए। जब वह वापिस घर आया तो बाबा बिशन दास जी ने उससे कहा, ''देख एकम दास, अब तू बूढ़ा हो गया है, तुझसे दुनियादारी नहीं होगी।'' उस समय उसकी आयु सत्तर साल की हो गई थी लेकिन उसने कहा, ''मैंने शादी करनी है।'' आखिर उसने शादी करवाई लेकिन वह शादी निभ नहीं सकी, टूट गई। उसने फिर शादी की, वह बूढ़ा था और औरत जवान थी। वह औरत एकम दास की पीठ पर सब्ज़ी लादकर मंडी में बेचने ले जाती थी।

एक बार मैं बाबा बिशन दास जी के दर्शनों के लिए जा रहा था। एकम दास मुझे रास्ते में मिला। जिन दिनों मैंने उस देखा था, उन दिनों तो उसकी सेहत काफ़ी अच्छी थी पर शादी के बाद उसकी सेहत डाउन हो गई। उसने मुझे पहचान लिया और कहने लगा, ''अजायब सिंह, तुम जल्दी वापिस मत जाना, मैंने तुम्हें कोई बात बतानी है।'' मैं अभी बाबा बिशन दास जी के पास बैठा था, वह मंडी में सब्जी छोड़कर वापिस आया। वह लकड़ी के सहारे झुककर चल रहा था। उसने आकर मुझसे कहा, ''मैंने गाँव के बाकी सारे लोगों को तो कह दिया है कि भई, शादी मत कराना, अब मैं तुम्हें भी कहता हूँ कि तुम शादी मत कराना।''

मैंने उससे कहा, ''एकम दास, तुम अभी भी भूल में हो, तुम्हें अभी भी कोई तजुर्बा नहीं हुआ। वक्त पर शादी कराना बुरा नहीं, तुम यह कहो कि मेरी तरह कोई पंगा न ले।'' कहने का भाव कि वह न घर का रहा न घाट का, न तीतर रहा न बटेर और उसने बहुत बुरे हालात में शरीर छोड़ा।

सन्तमत हमें हाथ पर हाथ रखकर बैठने की शिक्षा नहीं देता बल्कि मेहनत करने की प्रेरणा देता है। जो आदमी मेहनत करके अपनी रोज़ी रोटी कमाता है और उसी मेहनत की कमाई में से सतसंग और अपने बाल

बच्चों पर खर्च करता है या वह अपनी कमाई का अन्न खाता है तो उस पर अच्छा असर होगा और उसका भजन–अभ्यास अच्छा बनेगा। अगर हम किसी और का खाएंगे तो हमारा भजन वह ले जाएगा और इसके बदले हमें उसका क्रोध, ईर्ष्या, काम और बीमारियाँ मिलेंगी।

मेहनती आदमी अपना पेट पालता है और दूसरों का पेट भी पालता है। हमें मेहनत का चोर नहीं बनना चाहिए, मेहनत करनी चाहिए। अगर हम इस तरह सब कुछ छोड़कर बैठ जाते हैं तो हमें पता ही है कि मन फिर भी बाहर दौड़ता है और सारी दुनिया में फैल जाता है। मन अंदर बैठा ही कहता है कि बाहर कोई काम भी ढूँढना चाहिए, मन बैठा–बैठा ही प्लानिंग बनाता रहता है।

जब मैंने बाबा बिशन दास जी का बताया हुआ अभ्यास अठारह साल तक किया तब मैं खुद अपने हाथों से खेत में मेहनत करता रहा हूँ, कभी भी हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठा। दिन भर खेतों में काम करके जब मन और शरीर थक जाता तब मैं रातों को जागता और अभ्यास में अपना टाइम व्यतीत करता क्योंकि हम मन को जितना थका लेंगे, यह शरारतें नहीं करेगा। इसी तरह जब मैंने यहाँ 16 पी.एस. में अभ्यास किया था तो यह बाग उसी वक्त आबाद किया था। मैं यहां कस्सी से खूब काम किया करता था अगर मन से थोड़ा–बहुत काम लिया जाए तो यह शरारत नहीं करता। उसके बाद अपने कमाए हुए अन्न का अच्छा असर पड़ता है।

***एक प्रेमी**: हमारे देश में जब कोई साठ साल का हो जाए तो सरकार उसे पेन्शन देती है अगर वह औरत है और उसका पति उसे छोड़ जाए और पैसे न दे तो सरकार उसे भी भत्ता देती है, क्या इस तरह की मदद प्राप्त करना ठीक है?*

बाबा जी: सबसे बेहतर तो यही है कि इंसान अपने पैरों पर खड़ा हो अगर ऐसा नहीं होता तो आपको पता ही है कि सरकार जो मदद करती

है, वह भी लोगों के दान के पैसे से ही करती है। उसका कुछ कर्ज़ तो चुकाना ही पड़ेगा लेकिन भूखे बैठने से वह प्राप्त करना अच्छा है। इसलिए सतसंगी को ज़्यादा भजन करना चाहिए ताकि उसका भी जीवन अच्छा चलता रहे और जिस आदमी के वह पैसे हैं, उसका भी कर्ज़ उतरता रहे।

***एक प्रेमी**: ऐसा देखने में आया है कि गुरु की दया और हमारी इच्छा शक्ति, इन दोनों बातों को ध्यान में रखते हुए कई बार ऐसा होता है कि हमारे दिल में कोई काम करने की इच्छा होती है लेकिन गुरु की दया वहाँ मौजूद नहीं होती और हम वह काम नहीं कर पाते। क्या कभी ऐसा भी होता है कि गुरु अपनी दया उठा लेते हैं और हमारी इच्छा होने के बावजूद भी वह काम नहीं होता? क्या ऐसा भी हो सकता है कि गुरु की दया वहाँ पर मौजूद हो लेकिन हमारी इच्छा शक्ति में कमी होने की वजह से हम वह काम नहीं कर पा रहे?*

बाबा जी: ऐसा कोई वक्त नहीं जब आप पर गुरु की दया न हो रही हो लेकिन कई बार आप काम ही ऐसे करते हैं जिसमें आप कामयाब नहीं होते। आप काम करने से पहले नहीं सोचते या आप अपने किसी अच्छे मित्र की सलाह नहीं लेते इसलिए उस काम में कामयाब नहीं होते।

सतसंगी को भूलकर भी ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि मेरे ऊपर अब दया नहीं बेशक सतसंगी कितने ही कष्ट में है, सोया हुआ है या जाग रहा है। सोया तो सतसंगी है लेकिन शब्द-रूप गुरु नहीं सोते, वे हमेशा ही जागते हैं और साँस-साँस के साथ अपनी दया करते हैं। साँस ऊपर जाता है तब भी दया है, साँस नीचे आता है तब भी दया है इसलिए सतसंगी को भूलकर भी यह नहीं सोचना चाहिए कि गुरु किसी वक्त दया करते हैं और किसी वक्त दया नहीं करते; गुरु तो हमेशा ही दया करते हैं ।

मैं आपको एक उदाहरण के साथ समझाता हूँ कि एक दुनियादार पिता हमेशा ही अपने बच्चे की बेहतरी सोचता है। बच्चा कोई गलती कर

बैठता है तो भी पिता हिम्मत से काम लेता है अगर बच्चा कत्ल करके कैद भी हो जाता है, पिता फिर भी अच्छे से अच्छा वकील करके अपने बच्चे को छुड़वाने की कोशिश करता है। अगर एक दुनियावी पिता अपने बच्चे के लिए इतना कुछ करता है तो कुल मालिक सन्त सतगुरु तो हज़ारों ही माता–पिता जैसी हमदर्दी रखते हैं, वे खुद ही हम जीवों के लिए चोला धारणकर इंसानी ज़ामे में आते हैं ।

सोचकर देखें, क्या वे हमारे लिए कोई कसर छोड़ सकते हैं? बिल्कुल भी नहीं छोड़ सकते। वे बहुत दृढ़ विश्वास के साथ हमारा पालन पोषण करते हैं और ख्याल भी रखते हैं लेकिन कई बार बच्चा अग्नि में हाथ डालता है तो माँ उसे हाथ डालने नहीं देती, माँ को पता है कि हाथ जल जाएगा। बच्चा कोयले को हाथ लगाता है लेकिन माता–पिता को पता है कि उसके हाथ काले हो जाएँगे इसलिए फौरन उसका हाथ पकड़ लेते हैं ।

हमें पता नहीं होता कि हम जो काम कर रहे हैं यह हमारे फ़ायदे का है या कुफायदे का है। गुरु को इसकी बेहतरी का पता होता है। जब हमारी इच्छा के मुताबिक़ वह काम नहीं होता तो हम अभाव ले आते हैं कि इसमें गुरु की दया नहीं थी। गुरु की दया तो है लेकिन कुछ समय बाद पता चलता है कि अच्छा हुआ जो यह काम हमारी इच्छा मुताबिक नहीं हुआ।

सतगुरु जब आते हैं तो वह हमें सतसंग के जरिए घरेलू ज़िंदगी सुधारने के लिए ज़ोर देते हैं कि आप घर को स्वर्ग बनाकर रखें, घर का वातावरण न बिगाड़ें, घर में प्यार से रहें। यह परमार्थ की नींव है अगर हमारा यह वातावरण ठीक है तो आगे हमारा रूहानी सफ़र बहुत अच्छे ढंग से चल सकता है। वे हमें यह भी समझाते हैं कि आपकी परेशानियाँ मेरी ही परेशानियाँ हैं। जरा सोचकर देखें, जब सेवक परेशान हो तो क्या गुरु जो आपके अंदर शब्द रूप होकर बैठे हैं, वे परेशान नहीं होंगे? वे ज़रूर परेशान होंगे और आपसे कहीं ज्यादा परेशान होंगे।

हमें हमेशा अभ्यास करके अंदर जाना चाहिए और गुरु को प्रकट करना चाहिए। हम जो भी काम करें, गुरु का हुक्म लेकर करें ताकि आपको यह पता चले कि वास्तव में हमारे गुरु इसमें खुश हैं या नाराज़ हैं।

सोचकर देखें, जब सेवक सन्तमत से दूर चला जाता है, सन्तमत के सिद्धान्त छोड़कर उल्टे काम करता है तो गुरु उस समय बहुत धीरज और सब्र से काम लेते हैं। वे कहते हैं कि यह भूला हुआ बच्चा क्या कर रहा है? वे फिर भी उसे समझाने की कोशिश करते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

दास दुखी तो हरि दुखी।

गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज कहते हैं :

सुखी बसै मोरो परिवारा,सेवक सिक्ख सभै करतारा।

आप जरा सोचकर देखें कि जब हम सन्तमत के सिद्धान्तों से दूर चले जाते हैं तो इसका मतलब यह है कि हम अपने गुरुदेव के लिए परेशानियाँ खड़ी कर रहे हैं। हमें हमेशा ही सन्तमत के सिद्धान्तों पर चलना चाहिए। गुरु साहब कहते हैं :

ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ आपि मुकतु मोहि तारै।

एक प्रेमी: *सतगुरु पर हमारा कोई ज़ोर नहीं और दूसरी बात यह है कि हम लोग उनकी दया के आसरे हैं। प्यार की एक बूंद मांगते हुए आपसे विनती करते हैं कि क्या आप हमारे दिल खोल सकते हैं और कृपाल की खूबसूरती और प्यार को बयान कर सकते हैं?*

बाबा जी: मैं सबसे पहले यह मानता हूँ कि गुरु पर हमारा ज़ोर नहीं लेकिन जब मैंने यह भजन परम पिता कृपाल के आगे बोला था तो उन्होंने मुझे यही कहा था, ''जो भजन–सिमरन करते हैं, उनका गुरु पर ज़ोर होता है।'' प्यारे बच्चे अपने पिता को प्यार की ज़ंजीरों से बांध लेते हैं। पिता यह नहीं पूछता कि मुझे क्यों बांधा है क्योंकि उन्होंने अपने प्यार में पिता को अपने वश में कर लिया हैं। प्यारे बच्चे के लिए पिता कोई कसर

नहीं छोड़ता, पिता बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने से भी नहीं झिझकता। गुरु दिलों की जानते हैं, वे आपके अंदर बैठे हैं।

एक बार मैंने आंवले का अचार डाला और फुलका तैयार किया, अचार बहुत स्वादिष्ट था। मेरे दिल में ख्याल आया कि जिस तरह गुरु नानक देव जी की बहन ने फुलका तैयार करके कहा था कि यह तो भाई के खाने वाला है, तब गुरु नानक देव जी काफ़ी दूर से चलकर आए और बहन की इच्छा पूरी की। क्या उसी तरह मेरी इच्छा भी पूरी हो सकती है?

यह एक सच्चाई है कि परम पिता कृपाल ने उसी वक्त एक प्रेमी रामलाल को भेजा कि तू जाकर बता दे कि मैं आ रहा हूँ। महाराज जी कार से आए और उन्होंने खाने के साथ मेरा आंवला खाया। मैं कई बार सतसंग में उस आंवले का जिक्र किया करता हूँ। परम पिता ने कहा, ''भई, मैंने तेरा नमक खाया है, अब तुम्हें ज़रूर कुछ देना पड़ेगा।'' मैं यह कहा करता हूँ कि परम पिता ने मेरी इच्छा पूरी की क्योंकि वे दिलों की जानते हैं। परम पिता कृपाल का स्वरूप ब्यान नहीं किया जा सकता।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर गूँगा मिश्री खा ले तो वह मिश्री का स्वाद नहीं बता सकता, ज़्यादा से ज़्यादा खुशी में उछल–कूद कर सकता है।'' इसी तरह वह स्वरूप देखने के काबिल है, उसे ब्यान नहीं किया जा सकता। बेशक करोड़ों ग्रंथ उस स्वरूप की महिमा कर लें फिर भी वह ब्यान में नहीं आ सकता।

मैं आपको ज्यादा से ज़्यादा इतना ही बता सकता हूँ कि यह दुनिया बहुत सुंदर विषय–विकारों का जंगल है, मन और आत्मा इसमें भटकते फिरते हैं। जब इन्हें कोई पूरा गुरु मिल जाता है तो यह सिमरन के जरिए तीसरे तिल पर टिकना शुरू कर देते हैं। जब इससे ऊपर जाते हैं तो गुरु स्वरूप तक पहुँच जाते हैं। उस मनमोहक शब्द–स्वरूप के अंदर इस तरह कशिश होती है जैसे मैग्नेट के अंदर होती है। लोहा जब मैग्नेट के

दायरे में आ जाता है तो मैग्नेट उसे फौरन खींच लेता है। इसी तरह जब हमारी आत्मा उस शब्द के दायरे में आ जाती है, अंदर चली जाती है तो वह स्वरूप हमारी आत्मा को अपने साथ खींच लेता है। जब हम अंदर के मंडलों में गुरु की पोजिशन और हैसियत देखते हैं कि किस तरह सब विरोधी ताकतें ऊपर के मंडलों में गुरु की इज्जत करती हैं फिर हम गुरु को छोड़ नहीं सकते, सपने में भी गुरु को भुला नहीं सकते फिर हमारे दिल में गुरु के प्रति सच्ची इज्जत और सच्चा प्यार जागता है।

एक प्रेमी: *मेरे तीन सवाल हैं, पहली बात यह है कि सुबह तीन बजे से छः बजे तक का समय अभ्यास के लिए सबसे अच्छा क्यों है? दूसरी बात यह है कि जो आप अभ्यास करने से पहले यह कहते हैं कि जब हम अपने मन और आत्मा को तीसरे तिल से नीचे जाने की आज्ञा देते हैं, तब हम बहुत सारी ताकत खो बैठते हैं। वह ऐसी कौन सी ताकत है जो हम खो बैठते हैं, क्या वह शारीरिक ताकत है? क्या वह पूरे दिन पर लागू होती है? तीसरी बात यह है कि महाराज जी यह कहा करते थे कि जब हम ज्योत देखते हैं सिर्फ उसी समय हम तरक्की कर रहे होते हैं और ज्योत देखने से ही हमारी तरक्की होती है। मेरा सवाल यह है कि ऐसा क्यों है कि ज्योत देखने से ही हमारी तरक्की होती है? इसमें कौन सी क्रिया है?*

बाबा जी: पहली बातः हाँ भई, हुजूर महाराज कृपाल सिंह जी ने सतसंगों में सुबह के टाइम पर काफ़ी रोशनी डाली है क्योंकि एक तो हमने दिन भर जो कारोबार किए होते हैं, उन्हें नींद लेकर बिल्कुल भूल चुके होते हैं। नींद आने से शरीर हल्का–फुल्का हुआ होता है और आत्मा ने शरीर में उसी वक्त प्रवेश किया होता है। उस समय अभ्यास करने वाले की आत्मा जल्दी ही शरीर को छोड़ने में कामयाब हो जाती है। दूसरा उस समय घर या मोहल्ले में कोई शोर–शराबा नहीं होता, सब लोग सोए होते हैं। अभ्यासी को उस वक्त शांत वातावरण से फायदा उठाना चाहिए।

दूसरी बात: आपने पूछा है कि जब मन और आत्मा नौं द्वारे में आ जाते हैं तो हम कौन सी शक्ति गंवा रहे होते हैं। आप सोचकर देखें कि आपका सफर तीसरे तिल से शुरू होता है जब आप नीचे आएंगे तो आपका मन आपके अंदर दुनिया के ख्याल ही उठाएगा और जब ख्याल उठेंगे तो वह इच्छा ही पैदा करेंगे। जब इच्छा उठती है फिर उसकी पूर्ति के लिए आप कई अयोग्य काम भी करते हैं।

तीसरी बात: सन्तमत में हमारा मक़सद ही ज्योत में जाना है, ज्योत ही जीवन है। यह परम पिता परमात्मा की ज्योत है और इसमें जाना ही हमारी ज़िंदगी है। परमात्मा ने हमारे अंदर यह ज्योत सच्चखंड से जगाई हुई है और हर मंज़िल में यही ज्योत आ रही है। जैसे–जैसे हम अभ्यास करेंगे, इस ज्योत के और भी नज़दीक होते जाएँगे आखिर हम अपने असली घर सच्चखंड पहुँच जाएंगे। इस प्रकाश में हम अपना रास्ता नहीं भूलेंगे और यह प्रकाश ही हमें रास्ता दिखाएगा। मैंने पहले दिन सतसंग में कहा था कि यह गुरु–परमात्मा का ही प्रकाश है, गुरु कुल–मालिक होते हैं इसलिए जब हम जाएँगे तो सारा रास्ता देखते जाएँगे।

***एक प्रेमी**: सुबह के अभ्यास के बाद जब हम आपके पीछे आते हैं और आप जब सीढ़ियाँ चढ़ जाते हैं, हम तब भी वहाँ खड़े रहते हैं, क्या यह नाजायज़ है?*

बाबा जी: अपना मन खुश करना है, जायज़ हो या नाजायज़। **गुरु का दर्शन** किसी भी हिसाब से मिल जाए, सवाल तो दर्शन करने का है।

मैं आपको महाराज सावन सिंह जी और उनके बलोचिस्तानी सेवक मस्ताना जी का एक चश्मदीद वाकया बताता हूँ। उस समय डेरा ब्यास में बिजली नहीं थी, प्रेमी हाथ से ही हुजूर महाराज सावन सिंह जी के लिए पंखा झलते थे। एक प्रेमी पंखा झल रहा था, बलोचिस्तानी मस्ताना के दिल में ख्याल आया कि यह बड़ा चौधरी है जो पंखा कर रहा है। क्या मेरा हक नहीं, क्या ये मेरे मालिक नहीं? मस्ताना जी को कई आदमियों ने रोका लेकिन उनके दिमाग़ में यही आया कि गुरु के लिए कितनी भी कुर्बानी की जाए वह छोटी है। महाराज सावन सिंह जी यह बात कहते हैं:

सँपा वार समूँद कर शेरां पए बुकण, जे यम होवे पहरू प्रेमी ना रुकन।

आखिर मस्ताना जी धक्का मारकर आगे चले गए और उससे पंखा पकड़ लिया। वह प्रेमी भी अकड़ा हुआ था कि मैं पंखा झल रहा हूँ। मस्ताना जी ने उससे पंखा छीनने की कोशिश की लेकिन वह पंखा नहीं छोड़ रहा था। आखिर मस्ताना जी ने उसे उठाकर महाराज सावन सिंह के ऊपर ही गिरा दिया।

महाराज सावन सिंह जी ने उस प्रेमी से कहा, ''क्यों भई, तू हटता क्यों नहीं?'' उस प्रेमी ने कहा, ''जी, मस्ताना नहीं हट रहा।'' महाराज जी पीछे हो गए और कहने लगे, ''अगर यह नहीं हटता तो तू हट जा।'' जब ऐसा हुआ तो महाराज जी काफ़ी खफ़ा हुए। मस्ताना जी ने कहा, ''सच्चे पातशाह, यह पंखा क्यों नहीं देता, क्या आप पर इसका ज़्यादा हक है?'' महाराज जी ने मस्ताना से कहा, ''तू जाकर कुएँ में छलांग मार, तू मुझे बहुत तंग करता है।''

प्रेमी रुकता नहीं क्योंकि गुरु का हुक्म मानना बहुत ज़रूरी होता है इसलिए मस्ताना जी ने सतसंग घर के नजदीक एक कुएँ में जाकर छलांग लगा दी। कुएँ में पानी काफ़ी गहरा था। महाराज सावन सिंह जी बहुत जल्दी वहाँ गए, नीचे रस्सा लटकाया और उससे कहा, ''भई, तू रस्सा पकड़ और ऊपर आ जा।'' मस्ताना जी ने रस्सा नहीं पकड़ा और कहने लगे, ''हमने तो हुक्म मानना है, अब आप डूबने क्यों नहीं देते?'' मस्ताना जी का यह कहना था कि नीचे सावन शाह हाथ देकर खड़े हैं।

बलोचिस्तानी मस्ताना कहा करते थे कि **गुरु का दर्शन** करने के लिए कितनी भी बड़ी रूकावट क्यों न हो, कितने सख्त हुक्म क्यों न हों, चाहे वहां यम जिसने साँस निकालने हैं, वह भी क्यों न खड़ा हो, शेर भी क्यों न गरजता हो फिर भी प्रेमी गुरु के दर्शनों से नहीं रुकेगा। महात्मा चतरदास जी को भी महाराज सावन सिंह जी से नाम था, वे लिखते हैं:

बेपरवाह पिया, पर पास खड़न न देवे।
छाया तक बेसब्रा आशिक, दिल नूं खुश कर लेवे।
चिक झरोखे पास खड़ोके, दुरों यार तकेंदा।
एवी जान ग़नीमत दिल नूं, लख लख शुक्र करेंदा।।

गुरु को किसी की परवाह नहीं होती, वे मालिक में समाए होते हैं। वे अपने गुरु के प्यार में मस्त होते हैं और हर एक को पास नहीं आने देते लेकिन प्रेमी दूर से ही गुरु की छाया या रूप देखता है कि यहां से थोड़ा बहुत तो दिखते ही हैं।

एक बार परम पिता कृपाल मेरे चौबारे में आराम कर रहे थे। दो प्रेमियों ने सीढ़ियाँ चढ़कर दरवाज़ा खोल दिया। महाराज जी बिजली की तरह कड़क कर बोले, ''मुझे आराम क्यों नहीं करने देते?'' एक प्रेमी ने दूसरे से कहा, ''क्यों मिली प्रसादी! कितनी स्वाद है। दर्शन करके दिल बहुत खुश हुआ।'' प्रेमी को तो दर्शनों से मतलब होता है, वह **गुरु के दर्शन** करके हमेशा खुश होता है, किसी की परवाह नहीं करता।

***

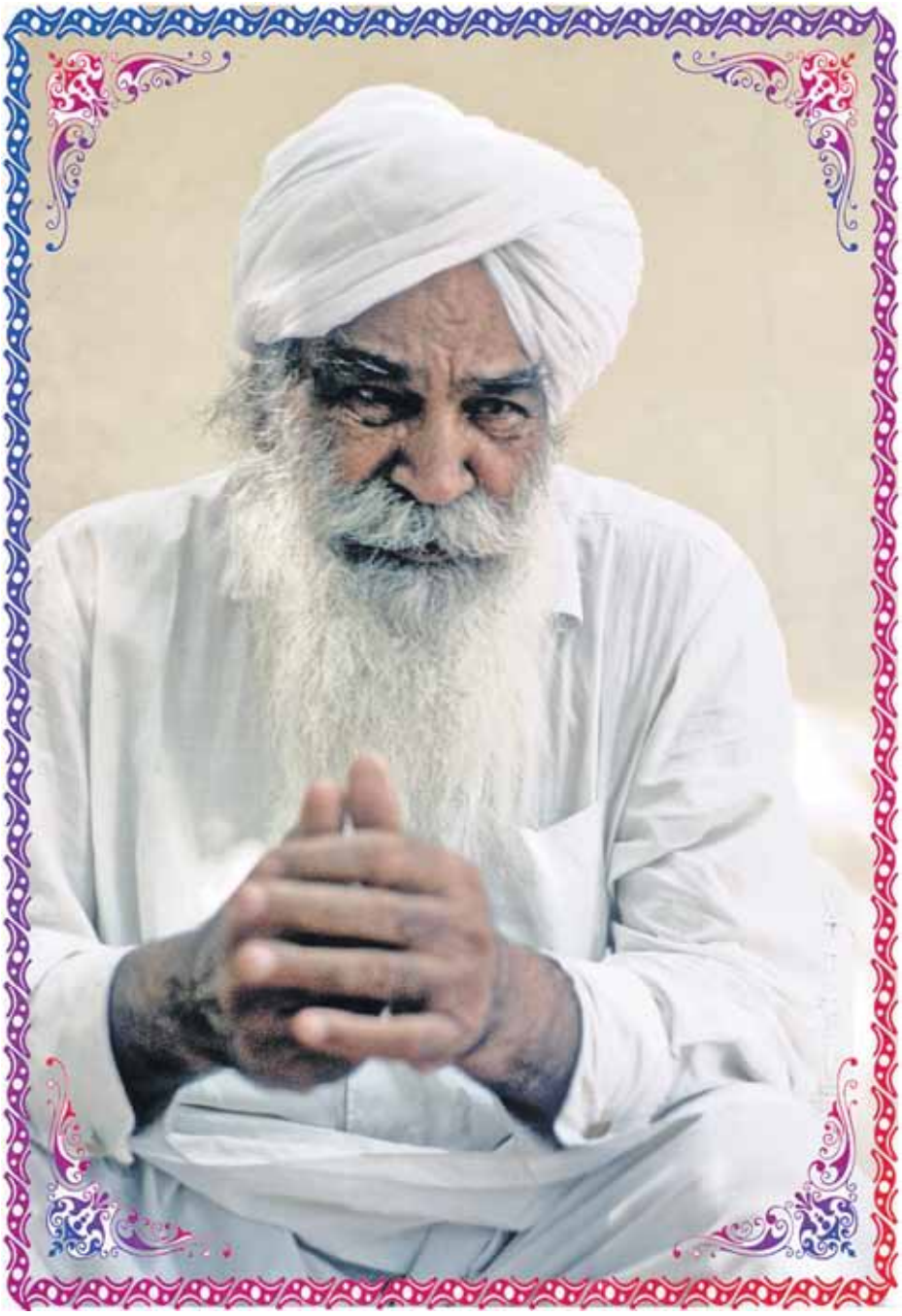

महाराज कृपाल सिंह जी के मुखारविंद से अनमोल वचन

आप अकेले नहीं हैं

गुरु के दिल में अपने बच्चों के लिए अथाह प्यार होता है। ज्यादातर बच्चों पर मिट्टी लगी होती है लेकिन गुरु उन्हें अपने से दूर नहीं करते, उनकी गंदगी साफ करते हैं फिर उन्हें प्यार से अपनी छाती से लगा लेते हैं। आपको डरने की जरूरत नहीं, आप मजबूत होकर पूरे विश्वास के साथ आगे बढ़ें अगर आप अपना चेहरा गुरु की तरफ रखेंगे तो आपको जरूरत अनुसार मदद और सुरक्षा मिलेगी।

गुरु के सुरक्षा करने वाले हाथ हमेशा नामलेवाओं के ऊपर होते हैं। **आप अकेले नहीं हैं**, आपके साथ कोई है जो आपकी चिंता और अंधेरेपन के बोझ को हटा सकता है। आप सब कुछ पीछे छोड़कर प्यार, शान्ति और स्थिरता से आगे बढ़ें।

इतिहास बताता है कि गुरु की मदद के बिना कभी कोई सही रास्ते पर नहीं चल पाया। यह एक मौलिक नियम है कि गुरु की मदद के बिना कोई भी अंदरूनी पर्दा नहीं खोल सका अगर कोई ऐसा कर सकता है तो उसे प्रयत्न करने दें कि वह ऐसा कर पाता है या नहीं? पिछले उदाहरणों से पता चलता है अगर किसी के पास अपना कुछ तजुर्बा है फिर भी उसे आगे के पथ पर बढ़ने के लिए किसी के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

जिन प्रेमियों को 'नामदान' मिल गया है, उन्हें प्रेम–प्यार से अपना भजन–सिमरन करते रहना चाहिए जिससे वे दिन–प्रतिदिन अंदर से तरक्की कर सकें और अंदरूनी दया का आनन्द ले सकें।

जिस तरह गर्मी के मौसम में बर्फ के नजदीक पहुँचने पर ठंडक महसूस होती है और इत्र की दुकान के नजदीक पहुँचने पर भीनी–भीनी

खुशबू महससू होती है, उसी तरह जैसे ही हम गुरु के संपर्क में आते हैं तो हमारे मन को शान्ति मिलती है और परमात्मा की दया महसूस होती है। यह शान्ति रेगिस्तान में हरियाली की तरह है। गुरु को परमात्मा की तरफ से काम सौंपा गया है जिसे वह प्यार से निभाते हैं।

आप अकेले नहीं हैं, गुरु ताकत हर समय आपके सिर पर है। गुरु को अपने बच्चों की जरूरतों का ज्ञान होता है। हमें एक–एक करके अपने ऐब छोड़ देने चाहिए, गुरु अंदर हमारी मदद करते हैं। इस कोशिश में समय लग सकता है लेकिन कामयाबी अवश्य मिलेगी।

शब्द बयान किए जा सकते हैं लेकिन गुरु की जुबान मूक होती है। हमें अपने गुरु के आनन्द को महसूस करना चाहिए। **आप अकेले नहीं हैं**, आप हमेशा मेरे मन में हैं।

गुरु ताकत इस दुनिया के अंत होने तक आपको नहीं छोड़ेगी। बिरह की आग आँसुओं से नहीं बुझाई जा सकती। गुरु की मीठी याद में बहाए गए आँसू आपको उसके नजदीक ले जाएंगे। जिस तरह पेड़ पर लगे फूलों से फल बन जाते हैं उसी तरह अगर आप गुरु को अपने मन में रखते हैं तो स्वाभाविक ही आप उसके मन में हैं।

गुरु का प्यार अपने बच्चों के लिए कभी कम नहीं होता। यह उस बच्चे की बदकिस्मती है जो अपने हृदय के द्वार बंद कर लेता है, वह गुरु के प्यार को अपने अंदर नहीं देख सकता। प्यारा पिता जब बच्चे का मुँह अपनी तरफ देखता है तो उसे दया का आनन्द देकर ही खुश होता है। गुरु की डोर लम्बी है, गुरु डोर को ढीली तो जरूर कर देते हैं लेकिन अपने हाथ से नहीं छोड़ते।

गुरु बाहरी और अंदरूनी मंडलों के मार्गदर्शन की विधि को बढ़ाते हैं। हर किसी को आजादी है कि वह उसके पास आए। जैसे एक बच्चा मुसीबत आने पर दौड़कर अपने पिता के पास आता है, जब भी जरूरी

होता है, पिता बच्चे की सहायता करता है। अनुशासित नामलेवा सिर्फ अपना ही भविष्य बेहतर नहीं बनाते बल्कि दूसरों के लिए भी एक उदाहरण बन जाते हैं।

रोशनी को छिपाकर नहीं रखना चाहिए। रोशनी को प्यार के साथ इस तरह रखना चाहिए कि वह सत्य की खोज करने वालों का ध्यान आकर्षित कर सके। जब हम परमात्मा की फौज में शामिल हो गए हैं तो हमें सही दिशा की ओर चलना चाहिए। हमें अपने जीवन को अच्छी सोच, दया भरे शब्द और अच्छे कर्मों से भरना चाहिए।

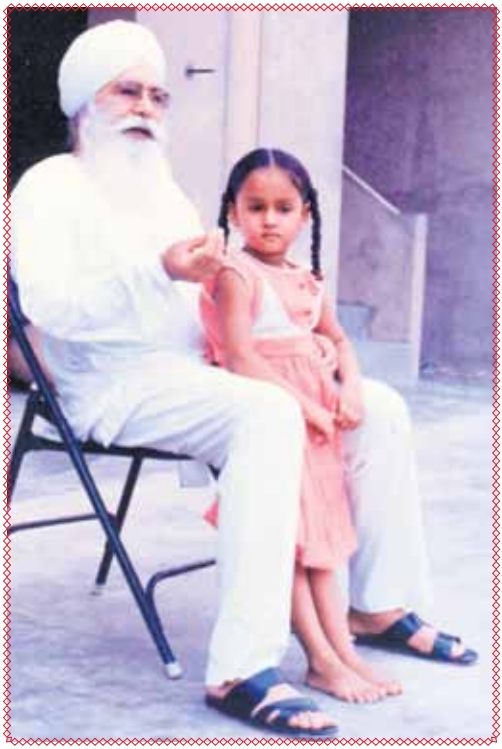

जब कोई बुरा सोचता है या बुरे कर्म करता है, उस समय बुराई की शक्ति प्रबल होती है। जो परमात्मा को पाना चाहते हैं उन्हें अच्छी सोच, अच्छे शब्द और उत्तम कर्मों का घी डालना चाहिए। अच्छे इंसान का धर्म है कि वह अपने दुश्मन से भी प्यार करे और उसे अपना दोस्त बना ले, पापी को सही रास्ता बताएं और विवेक की रोशनी फैलाएं।

पूर्ण गुरु द्वारा दिया गया 'नाम' एक ताकत है, उस 'नाम' में देने वाले की ताकत काम करती है। गुरु शरीर नहीं परमात्मा की ताकत हैं जो परमात्मा द्वारा चुने गए इंसानी पोल पर काम करती है। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

हमारे सतगुरु सावन–कृपाल ने हमारे ऊपर बहुत उपकार किया है। हमारे ऊपर वह दया की है जिसे हम ब्यान नहीं कर सकते, हमें भक्ति का दान दिया है। सन्त अपने सेवक को नाम का दान, अपनी जिंदगी का दान देते हैं। यह नाम न मूल्य देने से मिलता है, न माँगने से मिलता है और न ही हम इस नाम को खेतों में उगा सकते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

चल आगे उठ नाम जप।
काल तुध न व्यापी नानक मिटे अपाध।।

उठें, उठकर नाम जपें। सारी रात सोकर न बिताएं जितनी शरीर को जरूरत है उतना ही सोएं। काल ने अपनी फौजें बनाई हुई हैं, पाँचों डाकु–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हर एक को घेरे रखते हैं। ये डाकु मौके की ताक में रहते हैं कि कब जीव को अपने कब्जे में करें।

अगर आप नाम की कमाई करेंगे, नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आकर 'शब्द' के साथ जुड़ेंगे तो ये आपको तंग नहीं करेंगे। हमारा मन जो चालाकियाँ करता है, यह भी शान्त हो जाएगा।

अभ्यास के लिए यहाँ बैठें या अपने घर में बैठें, हर प्रेमी को पाँच पवित्र नाम अच्छी तरह याद कर लेने चाहिए। प्रेम–प्यार से आँखें बंद करके अपना अभ्यास शुरु करें।

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

पूर्ण गुरु द्वारा दिया गया 'नाम' एक ताकत है, उस 'नाम' में देने वाले की ताकत काम करती है। गुरु शरीर नहीं परमात्मा की ताकत हैं जो परमात्मा द्वारा चुने गए इंसानी पोल पर काम करती है।